आरोग्यके नियम

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ सम्पादक – प्यारेलाल अंक ४८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २८ दिसम्बर, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

मिश्र खाद

खाद दो तरहकी कही जा सकती है । अेक तो रासायनिक और दूसरी जीवित । कोअी पूछ सकता है कि खाद भी कभी जीवित होती है ? अिसका अर्थ अितना ही है कि यहाँपर जीवित शब्द नये तरीकेसे अिस्तेमाल किया गया है । अंग्रेजी शब्द 'ऑरगेनिक'का यह अनुवाद है । जीवित खाद, आदमी और जानवरोंके मल और अुसमें घास-पत्ते वग़ैरा मिलाकर या अुनके बिना तैयार होती है । वनस्पतिको हम निर्जीव नहीं मानते । लोहे वग़ैराको जड़ मानते हैं । अिस तरहके मिश्रणसे बनी हुअी खादको अंग्रेजीमें 'कम्पोस्ट' कहते हैं । मैंने कम्पोस्टकी जगह 'मिश्र' शब्द अिस्तेमाल किया है । अैसी खादको मैं सुनहरी खाद मानता हूँ । अैसी खादसे ज़मीनकी ताक़त बनी रहती है । अुसका शोषण नहीं होता । जब कि कहा जाता है कि रासायनिक खादसे ज़मीन कमज़ोर हो जाती है और कुछ समय तक अिस्तेमाल करनेके बाद अुसे (ज़मीनको) खाली रखना पड़ता है । जीवित खाद हानिकर जीव पैदा नहीं होने देती ।

अैसी खादका प्रचार करनेके लिअे मीराबहनकी प्रेरणा और अुत्साहसे दिल्लीमें अिस महीनेमें अेक सभा बुलवाअी गअी थी । अुसमें डॉ० राजेन्द्रप्रसाद सभापति थे । अिस कामके विशारद सरदार दातारसिंह, डॉ० आचार्य वग़ैरा भी अिकट्ठे हुअे थे । अुन्होंने तीन दिनके विचार-विनिमयके बाद कुछ महत्वके प्रस्ताव पास किये हैं । अुनमें यह बताया गया है कि शहरोंमें और ७ लाख गाँवोंमें अिस बारेमें क्या करना चाहिये । शहरोंमें और देहातोंमें मनुष्यके और दूसरे जानवरोंके मलको कूड़े-कचरे, चीथड़े, व कारखानोंमेंसे निकले हुअे मैलके साथ मिलानेका सुझाव रखा गया है । अिस विभागके लिअे अेक छोटी-सी अुप-समिति बनाअी गअी है ।

अगर यह ठहराव सिर्फ़ अखबारोंमें छपकर ही न रह जाय, और करोड़ों अुसपर अमल करें, तो हिन्दुस्तानकी शकल बदल जाय । हमारी बेखबरीसे जो करोड़ों रुपयोंका खाद बरबाद हो रहा है, वह बच जाय, ज़मीन अुपजाअू बने, और जितनी फसल आज पैदा होती है अुससे कअी गुनी ज़्यादा फसल पैदा होने लगे । परिणाम यह होगा कि भुखमरी बिलकुल दूर हो जायगी । करोड़ोंका पेट भरनेके लिअे अन्न मिलेगा और अुसके बाद बाहर भी भेजा जा सकेगा ।

आज तो जैसी अिन्सानकी और जानवरोंकी कंगाल हालत है वैसी ही फसलकी है । अिसमें दोष ज़मीनका नहीं, मनुष्यका है । आलस और अज्ञान नामके दो कीड़े हमको खा जाते हैं । मीराबहनने जो काम अुठाया है, वह बहुत बड़ा है । अुसमें सैकड़ों मीराबहनें खप सकती हैं । लोगोंमें अिस कामके लिअे अुत्साह होना चाहिये । विभागके लोग जागृत होने चाहियें । करोड़ोंके करनेका काम थोड़ेसे सेवक-सेविकाओंसे नहीं हो सकेगा । अिसमें तो सेवक-सेविकाओंकी फौज चाहिये ।

क्या हिन्दुस्तानकी अैसी अच्छी क़िस्मत है ? यहाँ हिन्दुस्तान याने दोनों हिस्से । अगर दक्षिणका हिस्सा यह काम शुरू कर दे, तो अुत्तरके हिस्सेने भी अुसे शुरू किया ही समझिये ।

नअी दिल्ली, २१–१२–'४७
(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

त्याग और अुद्यमका नमूना

भाअी दिलखुश दीवानजी अपने ४ दिसम्बरके खतमें लिखते हैं —

"आप टेकपर अड़े रहनेवाले कराड़ीके पांचा काकाको पहचानते ही हैं । २९–११–'४७ की दोपहरको अुनके भतीजे वालजी भाअी बुनाअी-काम करते करते हृदयकी गति बन्द हो जानेसे बुनाअी-घरके सामने ही मर गये । वालजी भाअी बचपनसे ही अपने काकाके पास रहे थे और अुनके टेकभरे जीवनका रंग अुनपर भी चढ़ा था ।

"१९२३में पांचा काकाने कराड़ीमें पहले पहल खड्डी चलाअी । थोड़े ही दिनोंमें वालजी भाअी जीन कारखानेकी अधिक तनखाहवाली नौकरी छोड़कर कराड़ीमें खड्डी चलाने लगे । जीवनकी आखिरी घड़ी तक अुन्होंने खड्डी नहीं छोड़ी और खड्डीके सामने ही जीवन-लीला समाप्त की । वे बहुत होशियार बुनकर थे । कअी युवकोंको अुन्होंने बुनाअी-काम सिखाया था । वे बहुत शान्त प्रकृतिके थे । सबके साथ घुलमिल जाते थे और हमेशा हँसते रहते थे । हमारे खादी-काममें वालजी भाअीने बुनाअी-कामका विकास करके आखिर तक हमारी बहुत मदद की । अैसे बुनकरके लिअे हमें गर्व था । अुनकी मौत भी धन्य है । काकाकी टेक भतीजेमें अुतरी ।

"काकाकी सत्याग्रही जमीनपर बने हुअे हमारे बुनाअी-घरके सामने ही वालजी भाअीने बुनाअीका काम करते करते देह छोड़ी । अुनके श्रमजीवी जीवनमें हमने त्याग, सेवा और अुद्यम-परायणताके सुमेलका अनुभव किया ।

"अुनकी सेवा मूक थी । मगर बुनाअी-कामके विकासमें वह ज़बरदस्त बनती गअी । ६–७ नौजवानोंका छोटा सा समूह अुन्हें घेरे रहता था और अुनकी देखरेखमें बुनाअी-काम सीख गया था । यही अुनकी विरासत है ।

"पांचा काकाकी टेक अभी जिन्दा है । अपनी ज़मीनमें हल चलानेकी वे अभी 'ना' ही करते हैं । वे पूछते हैं कि 'सच्चा स्वराज अभी आया कहाँ है ? जब प्रजा पुलिसकी मददके बिना रहना सीखेगी, तभी मेरी स्वराजकी टेक पूरी होगी । बापू साबरमती आश्रम वापिस कहाँ गये हैं ? बापू साबरमती जायेंगे, तभी ज़मीनमें हल चलाअूँगा और महसूल भरूँगा ।' अभी तक अुन्होंने वह ज़मीन हमारे कार्यालयको ही दे रखी है ।"

स्व० वालजी भाअी जैसे सेवक हिन्दुस्तानको या जगतको कम ही मिले हैं । 'पेड़ जैसा फल और बाप जैसा बेटा' वाली कहावत अुनके बारेमें सच साबित हुअी है । पांचा काकाकी टेक तो अद्वितीय ही रहेगी । सच्चा स्वराज कहाँ मिला है ? आज तो वह बहुत दूर लगता है ।

वालजी भाअी जैसे बुनकर ६–७ ही कैसे ? क्या अितनेसे कराड़ीने स्वराज्य लिया कहा जा सकता है ?

नअी दिल्ली, २२–१२–'४७
(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण

बिड़ला-भवन, नयी दिल्ली, १५–१२–'४७

शर्मनाक नाफरमानी

अखबारोंमें यह पढ़कर मुझे दुःख हुआ कि शरणार्थियोंने ६ म्युनिसिपल स्कूलोंके मकानोंपर कब्जा कर लिया है और दिल्ली म्युनिसिपल कमेटीकी पूरी कोशिशोंके बावजूद भी अुन्हें खाली नहीं किया। कमेटी अिन मकानोंको खाली करवानेके लिअे पुलिसकी मदद लेने जा रही है।

यह रिपोर्ट विश्वासके लायक लगती है। यह किस्सा शर्मनाक अन्धाधुन्धीका अेक नमूना है। यूनियनकी राजधानीमें अैसी चीजें हरअेकके लिअे शर्मका कारण हैं। मैं आशा करता हूँ कि कब्जा करनेवाले अपनी बेवकूफीके लिअे पछतायेंगे और अपने आप स्कूलोंके मकान खाली कर देंगे। अगर अैसा न हुआ, तो आशा है कि अुनके दोस्त अुनको समझा सकेंगे और सरकारको अपनी धमकीपर अमल नहीं करना पड़ेगा। शरणार्थियोंके सामने यह आम शिकायत है कि अितना दुःख सहन करनेके बाद भी वे समझदार, गंभीर और मेहनती कार्यकर्ता नहीं बने। हम सब आशा करते हैं कि आम तौरपर सब शरणार्थी और खास तौरपर ये स्कूलोंका कब्जा लेनेवाले भाअी प्रायश्चित्त करके अिस शिकायतको ग़लत साबित कर देंगे।

अन्धाधुन्धी और रिश्वतखोरी

शनिवारको मैंने कलकत्तेकी दंगाखोरीका जिक्र किया था। वहाँ शरारत करनेवाले शरणार्थी नहीं थे। अुसकी भूमिका भी अलग थी। सब नेताओंका, चाहे वे किसी भी खयाल या पार्टीके हों, यह फ़र्ज़ है कि वे हिन्दुस्तानकी अिज्जतकी दिलोजानसे रक्षा करें। अगर हिन्दुस्तानमें अन्धाधुन्धी और रिश्वतखोरीका राज चलें, तो हिन्दुस्तानकी अिज्जत बच नहीं सकती। मैंने रिश्वतखोरीका यहाँ जिक्र अिसलिअे किया है, क्योंकि अराजकता और रिश्वतखोरी दोनों अेक ही कुटुम्बकी हैं। कअी विश्वासपात्र जरियोंसे मुझे पता लगा है कि रिश्वतखोरी बढ़ रही है। तो क्या हिन्दुस्तानका हर आदमी अपना ही खयाल करेगा और हिन्दुस्तानकी भलाअी कोअी नहीं सोचेगा?

आश्वासन निरी चालाकी है

अेक भाअी लिखते हैं—"मैंने अभी आपकी कलकी प्रार्थनाका भाषण रेडियोपर सुना। अुसमें आपने कहा है कि यू० पी० के कुछ मुसलमान भाअियोंने, जो लाहोर जाकर आये हैं, आपको यह विश्वास दिलाया है कि गैर-मुस्लिम और खासकर हिन्दू वहाँ जाकर अपना कारबार शुरू कर सकते हैं। पहली बात तो यह है कि हिन्दुओंको ही बुलाना और सिक्खोंको नहीं बुलाना यह चालाकी है; और सिक्खों और हिन्दुओंमें फूट डलवानेकी चाल है। अिस तरहका आश्वासन धोखेबाजी है, मजाक है। शायद आप जैसे लोग ही अैसे मुसलमानोंकी बातोंमें आ सकते हैं। मैं आपको ११ दिसम्बरके 'हिन्दुस्तान टाअिम्स'की अेक कतरन भेजता हूँ। अुससे आपको पाकिस्तान सरकारकी सचाअी और साफदिलीका पता चल जायगा। यह पढ़कर भी क्या आप यह मानेंगे कि जो मुसलमान आपके पास आते हैं, वे अीमानदार हैं? वे सिर्फ़ अितना ही बताना चाहते हैं कि पाकिस्तान सरकार अल्पमतवालोंके प्रति न्याय करती है और पाकिस्तानमें सब ठीक-ठीक चल रहा है। अगरचे वाकयात अिससे अुलटे हैं। अगर वे मुसलमान आपके पास आवें, तो कृपा करके अुन्हें यह कतरन दिखाअियेगा। मैं विश्वास रखता हूँ कि आप भूले नहीं होंगे कि २० नवम्बरको जो हिन्दू और सिक्ख अपनी कीमती चीजें बैंकोंसे निकलवाने लाहोर गये थे, अुनका क्या हाल हुआ था। हिन्दुस्तानी मिलिटरीपर, जिसकी रक्षामें ये लोग गये थे, मुसलमानोंने हमला किया। पाकिस्तानी अफसरोंके सामने यह वाक़या हुआ। मगर अुन्होंने दंगाखोरोंको रोकनेकी कोअी कोशिश नहीं की। कतरनमें लिखा है:—

"लाहोर 'सिविल और मिलिटरी गजट' अखबारमें हाल ही में अेक रिपोर्ट छपी थी कि गैर-मुस्लिम व्यापारी और दुकानदार, जो दंगोंके दिनोंमें भाग गये थे, धीरे धीरे महीनोंका बन्द पड़ा अपना कारोबार फिरसे चलानेकी आशासे वापिस आ रहे हैं। मगर अुनकी दुकानें वगैरा वापिस करनेसे पहले अुनसे अैसी नामुमकिन शर्तोंपर दस्तखत कराये जाते हैं कि कअी निराश होकर वापिस चले गये हैं। फिर बसानेवाला कमिश्नर अिन शर्तोंपर दुकानें खोल देता है:—

१. बिक्रीका पूरा हिसाब रखा जाय।

२. बिना अिजाजत मालिक कुछ भी माल या रुपया दूसरी जगह न ले जाय।

३. अपनी दुकानको चालू धन्धा रखनेका वचन दे।

४. बिक्रीसे जितनी कमाअी हो, वह रोजकी रोज बैंकमें जमा की जाय; बिना अिजाजत अुसमेंसे कुछ भी निकाला न जाय।

५. दुकानदार कायमी तौरपर लाहोरमें ही रहेंगे।'

मुसलमानोंपर अैसी कोअी शर्त नहीं है, तो हिन्दुओंपर क्यों? हिन्दू कहते हैं कि अिन शर्तोंका वे पालन न कर सकेंगे, सो निराश होकर वापिस चले जाते हैं।"

विश्वाससे विश्वास पैदा होता है

तो निराशाकी बात तो मैं पहले ही कर चुका हूँ। यह खबर सही हो, तो भी जरूरी नहीं कि अुन मुसलमान भाअियोंने मुझसे जो कहा, वह सर्वथा रद्द हो जाता है। अुन्हें न सिर्फ अपना नाम रखना है, बल्कि यूनियनमें वे जिनके नुमाअिन्दा हैं अुनका और पाकिस्तानका भी, जिसने अुन्हें यह सब आश्वासन दिया, नाम रखना है। मैं यह भी कह दूँ कि वे भाअी मुझे मिलते रहते हैं। आज भी आये थे। मगर मेरा मौन था और मैं अपनी प्रार्थनाका भाषण लिख रहा था, अिसलिअे अुनसे मिल न सका। अुन्होंने मुझे संदेशा भेजा है कि वे निकम्मे नहीं बैठे रहे। अिस मिशनका काम कर रहे हैं। पत्र लिखनेवाले भाअीको मेरी सलाह है कि जरूरतसे ज्यादा शक न करें और बहुत ज्यादा नाजुक बदन न बनें। विश्वास रखनेसे वे कुछ खोनेवाले नहीं हैं। अविश्वास आदमीको खा जाता है। वे सँभलकर चलें। मेरी तरफ़से तो अितना ही कहना है कि मैंने जो कुछ किया है, अुसका मुझे अफ़सोस नहीं। मैंने तो सारी जिन्दगी खुली आँखोंसे विश्वास किया है। मैं अिन मुसलमान भाअियोंका भी विश्वास करूँगा, जब तक कि यह साबित नहीं हो जाता कि वे झूठे हैं। विश्वासमें से विश्वास निकलता है। अुससे दगाबाज़ीका सामना करनेकी ताकत मिलती है। अगर दोनों तरफ़के लोगोंको अपने घरोंको वापिस जाना है, तो अुसका रास्ता यही है जो मैंने अख्तियार किया है और जिसपर मैं चल रहा हूँ।

डर ठीक नहीं

पत्र लिखनेवाले भाअीकी यह शंका कि यह निमंत्रण हिन्दुओं और सिक्खोंमें फूट डलवानेकी चाल है, ठीक नहीं है। मैंने मुसलमान भाअियोंसे कहा भी था कि अुनकी बातका अैसा खतरनाक अर्थ भी निकल सकता है। अुन्होंने ज़ोरोंसे अिन्कार किया कि अैसा कुछ मतलब अुसमें है ही नहीं। वापिस जानेवालोंके लिअे रास्ता साफ़ करनेमें मैं कोअी बुराअी नहीं देखता। अिस बातसे अिन्कार नहीं हो सकता कि पाकिस्तानमें सिक्खोंके सामने ज़हर ज्यादा है, मगर अिसमें भी शक नहीं कि हिन्दुओं और सिक्खोंको साथ साथ तैरना है या डूबना है। अुनके मनमें कोअी बुरे अिरादे नहीं होने चाहियें। साजिशबाजोंके बीच अीमानदारीका भाअीचारा नहीं हो सकता।

अखंड हिन्दुस्तानका नागरिक

पूर्वी पाकिस्तानसे अेक भाअी लिखते हैं—"हिन्दुस्तानके दो टुकड़े हो जानेके बाद भी आप अपने आपको अेक हिन्दुस्तानका बाशिन्दा कैसे कहते हैं? आज तो जो अेक हिस्सेका है, वह दूसरेका हो नहीं सकता।" कानूनके पंडित कुछ भी कहें, वे

(पृष्ठ ४१७ पर)

www.vinoba.in

मेवोंको गांधीजीका सन्देश

गुड़गाँव तहसीलके जसरा नामके गाँवमें अेक सभामें, जिसमें ज्यादातर मेव लोग ही थे, भाषण देते हुअे गांधीजीने कहा — "आज मेरी बातका वह प्रभाव नहीं रहा, जो पहले था। अेक जमाना था, जब मेरी हर बातपर अमल किया जाता था। अगर मेरे कहनेमें पहलेकी ताकत और प्रभाव होता, तो आज अेक भी मुसलमानको हिन्दुस्तानी संघ छोड़कर पाकिस्तान जानेकी जरूरत न पड़ती; न किसी हिन्दू या सिक्खको पाकिस्तानमें अपना घरबार छोड़ कर हिन्दुस्तानी संघमें आसरा खोजनेकी जरूरत होती। हिन्दुस्तान या पाकिस्तानमें जो कुछ हुआ — भयानक खूँरेजी, आग, लूट-पाट, औरतोंको भगाना, जबरदस्ती लोगोंका धर्म-पलटा करना और अिससे भी बुरी जो बातें हमने देखी हैं — वह सब मेरी रायमें बहुत बड़ा जंगलीपन है। यह सच है कि पहले भी अैसी बातें हुअी हैं, लेकिन तब अितने बड़े पैमानेपर साम्प्रदायिक फ़र्क़ नहीं पैदा हुआ था। अैसी बर्बरता भरी घटनाओंकी कहानियोंसे मेरा दिल रंजसे भर जाता है और माथा शर्मसे गड़ जाता है। अिससे भी ज्यादा शर्मनाक बात मन्दिरों, मसजिदों और गुरुद्वारोंको तोड़ने और बिगाड़नेकी है। अगर अिस तरहके पागलपनको रोका नहीं गया, तो वह दोनों जातियोंका सर्वनाश कर देगा। जब तक देशमें अिस तरहके पागलपनका राज है, तब तक हम आज़ादीसे कोसों दूर रहेंगे।

"लेकिन अिसका अिलाज क्या है? संगीनोंकी ताकतमें मेरा विश्वास नहीं है। मैं तो अिसके अिलाजके रूपमें आपको अहिंसाका हथियार ही दे सकता हूँ। वह हर तरहके संकटका सामना कर सकता है और अजेय है। हिन्दू धर्म, अिस्लाम, अीसाअी धर्म वगैरा सारे बड़े धर्मोंमें अहिंसाकी वही सीख भरी है। लेकिन आज धर्मके पुजारियोंने अुसे सिर्फ किताबी अुसूल बना रखा है; व्यवहारमें वे सब जंगलके कानूनको ही मानते हैं। संभव है, आज मेरी आवाज़ अरण्य-रोदन जैसी साबित हो, लेकिन मैं तो आपको अहिंसाके सन्देशके सिवा दूसरा कोअी सन्देश नहीं दे सकता — मैं तो यही कहूँगा कि जंगली ताकतकी चुनौतीका मुक़ाबला आत्माकी ताकतसे ही किया जा सकता है।

"मेवोंके प्रतिनिधिने मुझे वह दरखास्त पढ़ सुनायी, जिसमें अुनकी सारी शिकायतें दी गअी हैं और अुन्हें दूर करनेकी प्रार्थना की गअी है। मैंने वह खत आपके प्रधानमंत्री डॉ० गोपीचन्दके हाथमें रख दिया है। खतमें दी हुअी बहुतसी बातोंके बारेमें वह क्या करना चाहते हैं, यह तो वह खुद आपको बतायेंगे। मैं तो सिर्फ़ यही कह सकता हूँ कि अगर किसी सरकारी अफ़सरने बुरा काम किया होगा, तो मुझे यक़ीन है कि सरकार अुसके खिलाफ़ अुचित क़दम अुठानेमें और अुसे नसीहत देनेमें नहीं हिचकिचायेगी। किसी अेक आदमीको सरकारकी सत्ता हड़पने नहीं दी जा सकती, न वह यह आशा कर सकता है कि अुसके कहनेसे सरकारी अफ़सरोंको अेक जगहसे दूसरी जगह बदल दिया जाय। मैं यह भी साफ़ साफ़ जानता हूँ कि अपनी मरज़ी या राजी-खुशीकी दलीलपर किसीके धर्म-पलटेको या किसी औरतकी दूसरी जातिके मर्दके साथकी शादीको सही व क़ानूनी करार नहीं दिया जा सकता। जब चारों तरफ़ डरका राज फैला हो, तब 'राजी-खुशी या अपनी मरजी' की बात करना अिन शब्दोंके साथ अन्याय करना है।

"अगर आपके दुःखमें मेरे अिन शब्दोंसे आपको थोड़ी ढाढस बँधी, तो मुझे खुशी होगी। जिन मेवोंको अलवर और भरतपुरसे निकाला गया है, अुनके साथ मेरी पूरी हमदर्दी है। मैं अुस दिनकी आशा लगाये बैठा हूँ, जब सारे बैर भुला दिये जायँगे और सारी नफ़रत जमीनके अन्दर दफ़ना दी जायगी, और जिन्हें अपने घरोंसे निकाला गया है, वे सब अपने अपने घर लौटेंगे और पूरी शान्ति और सलामतीके वातावरणमें पहलेकी तरह अपने धन्धे चालू करेंगे। तब मेरा दिल खुशीसे नाचने लगेगा। जब तक मैं ज़िन्दा रहूँगा, तब तक यह आशा नहीं छोड़ूँगा। लेकिन मैं कबूल करता हूँ कि आजकी हालतोंमें यह नहीं हो सकता। मुझे अिस बातका भरोसा है कि हमारी यूनियन सरकार अिस बारेमें अपना फ़र्ज़ अदा करनेमें ढिलाअी नहीं दिखायेगी, और रियासतोंको यूनियन सरकारकी सलाह माननी पड़ेगी। यूनियनमें शामिल हो जानेसे रियासतोंके शासकोंको अपनी प्रजाको दबाने और कुचलनेकी आज़ादी नहीं मिल जाती। अगर राजाओंको अपना दरजा कायम रखना है, तो अुन्हें अपनी प्रजाके ट्रस्टी और सच्चे सेवक बनना होगा।"

अन्तमें गांधीजीने कहा — "मैं मेव भाअियोंसे अेक बात कहना चाहता हूँ। मुझसे यह कहा गया है कि मेव लोग करीब करीब जरायमपेशा जातियोंकी तरह हैं। अगर यह बात सही हो, तो आप लोगोंको अपने आपको सुधारनेकी पूरी कोशिश करनी चाहिये। अपने सुधारका काम आपको दूसरोंपर नहीं छोड़ना चाहिये। मुझे आशा है कि आप लोग मेरी अिस सलाहपर नाराज़ नहीं होंगे। जिस अच्छी भावनासे मैंने आपको यह सलाह दी है, अुसे आप अुसी भावनासे ग्रहण करेंगे। यूनियनकी सरकारसे मैं यह कहूँगा कि अगर मेवोंके बारेमें यह अिलजाम सही हो, तो भी अिस दलीलपर अुन्हें निकालकर पाकिस्तान नहीं भेजा जा सकता। मेव लोग हिन्दुस्तानी संघकी प्रजा हैं। अिसलिअे अुसका यह फ़र्ज़ है कि वह मेवोंको शिक्षाके सुभीते देकर और अुनके बसनेके लिअे बस्तियाँ बनाकर अपने आपको सुधारनेमें अुनकी मदद करे।"

अिसके बाद डॉ० गोपीचन्दसे कहा गया कि वह मेवोंसे दो शब्द कहें। अुन्होंने कहा — "पूर्वी पंजाबकी सरकारकी यह नीति है कि अेक भी मुसलमान मजबूरीसे अपना घर-बार छोड़कर हिन्दुस्तानी संघसे बाहर न जाय। जनताके प्रतिनिधि और सेवकके नाते मैं लोगोंकी सामूहिक रायपर अमल करनेके लिअे बँधा हुआ हूँ। मेरा यह फ़र्ज़ है कि मैं राजके सब वर्गों और सब जातियोंको अेकसी हिफाजतकी गारण्टी दूँ। मैं चाहता हूँ कि आप लोग अपने घरोंको लौट जायँ और अपने अपने धन्धे फिरसे चालू करें। आपको बिन जोती जमीनमें खेती करना चाहिये और ज़्यादा अनाज पैदा करनेमें मदद देना चाहिये। अगर कोअी आपको सतानेकी कोशिश करे, तो आप यह बात हाकिमोंके ध्यानमें लाअिये। वे आपकी जरूरी हिफ़ाजत करेंगे। जिन सरकारी अफ़सरोंके खिलाफ़ आपकी शिकायतें हैं, अुनके बारेमें अपनी सारी शिकायतें आप अुचित जरियोंसे अधिकारियों तक पहुँचायें और अगर वे भी आपकी शिकायतें दूर न करें, तो आप और भी अूँचे अधिकारियोंसे अपील करें। मुझे अफसोस है कि मैं आपके अिस सुझावको मंजूर नहीं कर सकता कि आपके हिस्सोंमें पहले जो अफसर काम करते थे, अुन सबको दूसरी जगह भेज दिया जाय और अुनकी जगह काम करनेके लिअे अम्बाला डिवीजनके अफसरोंको रखा जाय। सरकारके सारे अफसर अपनी वफादारीकी सौगन्धसे राजकी नीतिके अनुसार अीमानदारीसे काम करनेके लिअे अेक से बँधे हुअे हैं। अिसलिअे मैं किसी खास डिवीजनके अफसरोंके खिलाफ अैसा फर्क नहीं कर सकता। मैं सिर्फ यही यक़ीन दिला सकता हूँ कि जो अफ़सर सरकारकी नीतिके खिलाफ काम करेगा, अुसे अुचित सजा दी जायगी। आपको खाना और कपड़ा देनेके सम्बन्धमें मैं डिप्टी कमिश्नरको पहले ही हुक्म दे चुका हूँ कि वे अिन चीजोंका ठीक ठीक बन्दोबस्त कर दें। मैंने जिला अधिकारियोंको यह आदेश भी दिया है कि वे अपने अफसरोंके कहे मुताबिक ही काम न करें, बल्कि दुःखी लोगोंके प्रतिनिधियोंके पूरे सहकारसे काम करें।

www.vinoba.in

"भरतपुर और अलवर रियासतोंसे निकाले गये जो लोग वहाँ वापस जाना चाहते हैं, उनके बारेमें केन्द्रीय सरकारकी अेजेन्सीके मारफत ही विचार किया जा सकता है।

"अन्तमें जिन लोगोंके घरोंमें भगाअी हुअी लड़कियाँ या औरतें हों, उनसे मैं तहेदिलसे यह अपील करता हूँ कि वे अैसी औरतोंको उनके रिश्तेदारों और संरक्षकोंको लौटा दें। अैसी औरतोंको निकालनेमें मदद करनेके लिअे अेक कमेटी बनाअी गअी है। जिनके घरोंमें अैसी औरतें हों, उन्हें अिस कमेटीसे अपना सम्बन्ध कायम करना चाहिये। मैं फिर कहता हूँ कि जिन हालतोंमें धर्म-पलटा किया गया है, उन पर खयाल करते हुअे मेरी सरकार अैसे धर्म-पलटेको राजीखुशीकी दलीलपर सही नहीं मानेगी। अैसे धर्म-पलटेको मैं बेकारसे भी बुरा समझता हूँ — वह धर्म नहीं, अधर्म है।"

९–१२–'४७

(अंग्रेजीसे)

प्यारेलाल

हरिजनसेवक

२८ दिसम्बर १९४७

आरोग्यके नियम

श्री ब्रजलाल नेहरू मेरे जैसे ही खब्ती हैं। उन्होंने अखबारोंमें अेक पत्र लिखा है, जिसमें आरोग्य-मंत्री राजकुमारी अमृतकुँवरके अिस कथनकी तारीफ़ की है कि हमारी बीमारियाँ अपने अज्ञान और लापरवाहीमेंसे पैदा होती हैं। उन्होंने यह सूचना की है कि आज तक आरोग्य-विभागका ध्यान अस्पताल वगैरा खोलनेपर ही रहा है। उसके बदले राजकुमारीने जिस अज्ञानका जिक्र किया है, उसे दूर करनेकी तरफ अिस विभागको ध्यान देना चाहिये। उन्होंने यह भी सुझाया है कि अिसके लिअे अेक नया विभाग खोलना चाहिये। परदेशी हुकूमतकी यह अेक बुरी आदत थी कि जो सुधार करना हो, उसके लिअे नया विभाग और नया खर्च खड़ा किया जाय। लेकिन अिस बुरी आदतकी नकल हम क्यों करें? बीमारियोंका अिलाज करनेके लिअे अस्पताल भले रहें, लेकिन उनपर अितना वजन क्या देना? घर बैठे आरोग्य कैसे सँभाला जा सकता है, अिसकी तालीम देना आरोग्य-विभागका पहला काम होना चाहिये। अिसलिअे आरोग्य-मंत्रीको यह समझना चाहिये कि उसके नीचे जो डॉक्टर और नौकर काम करते हैं, उनका पहला फ़र्ज़ है जनताके आरोग्यकी रक्षा और उसकी सँभाल करना।

श्री ब्रजलाल नेहरूकी अेक सूचना ध्यान देने लायक है। वे लिखते हैं कि बीमारियोंके अिलाजके बारेमें ढेरों किताबें देखनेमें आती हैं, लेकिन कुदरती अिलाज करनेवालोंके सिवा डिग्रीवाले डॉक्टरोंने आरोग्यके नियमोंके बारेमें कोअी किताब लिखी हो अैसा कभी सुना नहीं गया। अिसलिअे श्री नेहरू यह सूचना करते हैं कि आरोग्य-मंत्री मशहूर डॉक्टरोंसे अैसी किताब लिखावें। यह किताब लोगोंके समझने लायक़ भाषामें लिखी जाय, तो ज़रूर उपयोगी साबित होगी। शर्त यही है कि अैसी किताबमें तरह तरहके टीके लगानेकी बात नहीं होनी चाहिये। आरोग्यके नियम अैसे होने चाहियें, जिनका पालन डॉक्टर-वैद्योंकी मददके बिना घर बैठे हो सकें। अैसा न हो, तो कुअेमेंसे निकलकर खाअीमें गिरने जैसी बात होना संभव है।

नअी दिल्ली, २१–१२–'४७

(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

सोमनाथका मन्दिर

कुछ दिनोंसे सुननेमें आ रहा है कि सोमनाथके पुराने मन्दिरको बढ़ाया और सुधारा जायगा और अीसाकी ग्यारहवीं सदीमें महमूद गज़नवी सोमनाथके मन्दिरके जो दो जड़ाअू किवाड़ अुखड़वाकर गज़नी ले गया था, अुन्हें फिरसे सोमनाथके मन्दिरमें लाकर लगा दिया जायगा।

जो लोग मन्दिरोंमें विश्वास रखते हैं, अुन्हें पूरा हक़ है कि वे अपने मन्दिरको जब चाहें बढ़ावें और अधिक सुन्दर और शानदार बनावें, बशर्ते कि अुससे किसी दूसरेका हक़ न छिनता हो। पर अिस मामलेमें दो बातें ध्यान देनेकी हैं। अेक यह कि किसी भी सरकारका, जिसकी प्रजामें कअी मज़हबोंके लोग शामिल हों, यह फ़र्ज़ है कि वह अैसे मामलोंमें सब मज़हबवालोंके साथ अेक सा बरताव करे और सबको अेक सी मदद या बढ़ावा दे। दूसरी बात अितिहासकी अेक छोटी सी घटना है।

सन् १८४२में लार्ड अैलेनब्रु हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल थे। पहला अफ़गान युद्ध छिड़ा हुआ था। कहा जाता था कि सोमनाथके मन्दिरके किवाड़ महमूद गज़नवीके मक़बरेपर लगे हुअे थे। लार्ड अैलेनब्रुने हुक्म दिया कि वे किवाड़ गज़नीसे हिन्दुस्तान लाकर अेक शानदार जुलूसके साथ सारे हिन्दुस्तानमें फिराये जावें और अखीरमें सोमनाथके मन्दिरमें ले जाकर फिरसे लगा दिये जावें। अिस मामलेकी बाबत १८ जनवरी, १८४३को लार्ड अैलेनब्रुने ड्यूक ऑफ् वेलिंगटनके नाम अेक खतमें लिखा कि — "मुझे हर तरहसे यक़ीन है कि सोमनाथके मन्दिरके किवाड़ोंको फिरसे वहाँ ले जाकर लगानेकी तजवीज़से हिन्दुओंकी बहुत बड़ी तादाद हमसे खुश हो गअी है और हमारी दोस्त बन गअी है। मेरे पास यह माननेकी कोअी वजह नहीं है कि मुसलमान अिससे नाराज़ हुअे हों। पर मैं अिस बातसे अपनी आँखें नहीं बन्द कर सकता कि मुसलमान क़ौम बुनियादी तौरपर हमारी दुश्मन है। अिसलिअे हमारी सच्ची चाल यही है कि हिन्दुओंको अपने दोस्त बनाकर रखें।"

सोमनाथके किवाड़ अफ़गानिस्तानसे हिन्दुस्तान लाये गये। हैदराबाद, सिंध, नैपाल, सागर, बुन्देलखण्ड और क़रीब क़रीब सारे हिन्दुस्तानमें अिसके अैलान बाँटे गये। अिन अैलानोंमें सब हिन्दू सरदारों, राजाओं, महाराजाओं और हिन्दू प्रजाको मुसलमान बादशाहोंकी करतूतोंकी याद दिला-दिलाकर अुन्हें हिन्दू धर्मका दुश्मन और अंग्रेज सरकारको हिन्दू धर्मका दोस्त दिखलाया गया। किवाड़ोंका जुलूस सारे पंजाबमें निकाला गया। पर वे किवाड़ सोमनाथ तक पहुँचनेकी जगह आगरेसे आगे न बढ़ सके।

कुछ लोगोंको हैरानी हो रही थी कि जब कि अफ़गानिस्तानपर हमला करनेवाली १६०००की सारी अंग्रेजी फ़ौजमें से सिर्फ़ अेक अंग्रेज डा० ब्राअिडन ज़िन्दा बचकर हिन्दुस्तान लौट सका, तो ये किवाड़ अफ़गानिस्तानसे यहाँ तक कैसे आ सके। धीरे धीरे किवाड़ोंके आगरे पहुँचते तक बात खुल गअी कि वे किवाड़ सोमनाथके मन्दिरके किवाड़ थे ही नहीं। जुलूस आगे न बढ़ सका। दोनों बनावटी किवाड़ आगरेके क़िलेमें रख दिये गये। अुनपर यह साफ़ लिखकर टाँग दिया गया कि चूँकि बादमें पता चला कि किवाड़ बनावटी हैं, अिसलिअे अुन्हें आगे नहीं ले जाया गया। शायद अिन्हीं बनावटी किवाड़ोंको अब सोमनाथके मन्दिरमें ले जाकर लगानेकी तजवीज़ हो रही है।

सुन्दरलाल

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी

लेखक : गांधीजी

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीके बारेमें गांधीजीके आज तकके सारे विचारोंका संग्रह। कीमत — डेढ़ रुपया; डाकखर्च — ५ आने।

व्यवस्थापक, नवजीवन कार्यालय
पोस्ट बॉक्स १०५, अहमदाबाद

www.vinoba.in

गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण

(पृष्ठ ४१४ से आगे)

मनुष्योंके मनपर राज नहीं कर सकते । अिस मित्रको भी यह कहनेसे कौन रोक सकता है कि वह सारी दुनियाका बाशिन्दा है । कानूनकी दृष्टिसे अैसा नहीं है, और हरअेक मुल्कके कानूनके मुताबिक कअी मुल्कोंमें अुसे कोअी घुसने भी नहीं देगा । जो आदमी मशीन नहीं बन गया है, जैसे कि हममेंसे कअी लोग नहीं बने हैं, अुसे कानूनन हमारी क्या हस्ती है अिसकी फिक्र क्या ? जब तक नैतिक दृष्टिसे हम सही रास्तेपर हैं, हमें फिक्र करनेकी जरूरत नहीं । हम सबको जिस चीजसे बचना है, वह तो यह है कि हम किसी मुल्कके प्रति या किसी मुल्कके लोगोंके प्रति वैरभाव न रखें । मिसालके तौरपर मुसलमानोंके प्रति या पाकिस्तानके प्रति वैरभाव रखकर कोअी भी पाकिस्तानका और यूनियनका बाशिन्दा होनेका दावा नहीं कर सकता । अगर अैसा वैरभाव आम तौरपर फैल जावे, तो दोनोंमें लड़ाअी ही होनेवाली है । हरअेक मुल्क अैसे बाशिन्दोंको, जो मुल्ककी तरफ़ दुश्मनी रखते हैं और दुश्मन मुल्ककी मदद करते हैं, दगाबाज और बेवफा करार देगा । वफादारीके हिस्से या टुकड़े नहीं किये जा सकते ।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १६-१२-'४७

अंकुश हटानेका नतीजा

कहा जाता है कि खाने-पहननेकी चीजोंपर जो अंकुश रहा है, वह जा रहा है । अुसका परिणाम मेरे सामने ब्रजकिशनजीने रख दिया है । मैंने सोचा कि आपके सामने भी वह रख दूँ । पहले गुड़ रुपयेका अेक सेर आता था, अब आठ आने सेर मिलने लगा है । यह बड़ी बात है । कोअी कारण नहीं है कि अिससे भी कम दाम नहीं होने चाहियें । जब मैं लड़का था, तब तो अेक आनेका सेर भर गुड़ आता था । अिसी तरह जो शक्कर पहले ३४ रुपये मन थी, वह अब २४ रुपये मन हो गअी है । मूँग, अुड़द और अरहरकी दाल अेक रुपयेकी १४ छटाक मिलती थी, वह अब रुपयेकी डेढ़ सेर हो गअी है । अिसी तरह चना २४ रुपये मन था और अब १८ रुपये मन हो गया है । गेहूँ काले बाज़ारमें ३४ रुपये मन था, वह अब २४ रुपये मन हो गया है । यह सब मुझे अच्छा लगता है । मुझे लोग कहते थे कि 'आप अर्थशास्त्र नहीं जानते; भावकी चढ़-अुतर नहीं समझते । आप तो महात्मा ठहरे । आप कहते हैं कि अंकुश अुठा दो । मगर अुसका नतीजा भोगना पड़ेगा गरीबोंको । गरीबोंको मरना पड़ेगा ।' मगर आज तो अैसा लगता है कि गरीबोंको मरना नहीं तरना है । बाजरे और मक्कीपरसे भी अंकुश अुठना चाहिये । बहुतसे लोग वही खाते हैं । डॉ० राजेन्द्र प्रसादने कहा है कि धीरे धीरे सब अंकुश अुठ जायँगे । अूपरके आँकड़ोंपरसे लगता है कि वे अुठने ही चाहियें । दियासलाअीके आज बड़े अूँचे दाम हैं । कंट्रोल अुठनेपर वे जरूर गिरेंगे । आज तो दियासलाअीका बकस अेक आनेका अेक आता है । पहले अेक आनेके १२ मिलते थे । दाम अगर बढ़ने हैं, तो वे मेहनत करनेवालोंके घर जायँ । मगर अिस कारणसे दाम बहुत नहीं बढ़ते । बहुत दाम बढ़नेका कारण होता है तिजारत करनेका पाजीपन । हमने बहुत आपत्तियाँ सहन कीं । अब आज़ादी आ गअी । अब तो हम कहीं न कहीं शुद्ध काम करें ! शुद्ध कौड़ी कमावें ! दाम बढ़नेका डर अिसलिअे रहता है कि हम पाजी हैं, दगाबाज़ हैं, ताजिर (व्यापारी) लोग शुद्ध कौड़ी कमाना नहीं जानते । यह सब कहते मुझे शर्म आती है । अैसी हालतमें पंचायत-राज कैसे कायम हो सकता है ? हम सबको सिविल सर्विसके सिपाही बनना है । हम लोगोंके लिअे ही जिन्दा रहें, तो हमारे लोगोंमें जो अेक तरहका पाजीपन और दगाबाज़ी आ गअी है, वह निकल जायेगी । हम सीधे हो जायेंगे । मेरे पास कुछ तार आये हैं कि बम्बअीकी तरफ अंकुश अुठनेसे कुछ गोलमाल चलता है । दूसरी तरफ़से तार आते हैं कि जो हुआ वह शुभ काम है । यह होना ही चाहिये था ।

तनखाहें और सिविल सर्विस

मेरे पास शिकायत आती है कि सिविल सर्विसपर अितना खर्च क्यों किया जाता है ? लेकिन सिविल सर्विसको अेकदम हटा नहीं सकते । हटा दें तो काम कैसे चले ? कुछ लोग तो चले गये । अिसलिअे जो लोग रह गये हैं, अुनसे ज्यादा काम लेना पड़ता है । सरदार पटेलने अुन्हें धन्यवाद भी दिया है । जो लोग धन्यवादके लायक़ हैं, अुन्हें धन्यवाद मिले, तो मुझे कोअी शिकायत नहीं हो सकती । मगर सच्ची सिविल सर्विस तो हम लोग हैं । हम जितना विश्वास सिविल सर्विसके लोगोंपर रखते हैं, अुतना अगर अपने आपपर रखें, तो हम बहुत आगे बढ़ सकते हैं । अगर हम दगा करें, तो जैसे सिविल सर्विसको सज़ा होती है, वैसे ही हमें भी सज़ा हो । अमुक काम सौंपकर कहा जाय कि अितना काम आपको करना ही है । अिस तरह सारी प्रजाको हम जिम्मेदार समझते हैं । जिन्हें पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी बनाते हैं अुन्हें भी दरमाहा देना पड़ता है और सिविल सर्विसवालोंको भी । जब कांग्रेसके हाथमें करोड़ोंका कारोबार नहीं था, तब तो हम किसीको दरमाहा नहीं देते थे । दरमाहा देना, मकान देना और पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी बनाना यह मुझे तो चुभता है । कांग्रेसका काम हमेशा सेवा करना रहा है । पहले हमें आज़ादी हासिल करनी थी । अब हिन्दुस्तानको अूँचा अुठाना है । यह देखना है कि हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, पारसी, अीसाअी सब लोग यहाँ शान्तिसे रहें । अिस कामके लिअे हम क्या पैसे दें ? आज तक नहीं देते थे, तो अब कैसे दें ? १४ अगस्तके बाद हमने देशको कितना आगे बढ़ाया है ? कितना पानी गिरा, कितनी अुपज बढ़ी ? कितने अुद्योग बढ़े ? अिसका हिसाब तो लीजिये । पैसे क्या कर सकते हैं ? हिन्दका काम बढ़े, नाम बढ़े और दाम बढ़े, तब तो बात है । तब देहाती भी महसूस करेंगे कि कुछ हो रहा है । अैसा न हो और हम खर्च बढ़ाते जायँ, यह कैसे हो सकता है ? हर पेढ़ीको अपनी आमदनी और खर्चका हिसाब रखना पड़ता है । आमदनी खर्चसे ज्यादा हो, तो अच्छा लगता है । लेकिन अिससे अुलटी बात हो, तो चिन्ता होती है । हिन्दुस्तान अेक बड़ी पेढ़ी है । आज हमारे पास पैसे हैं, अिसलिअे हम नाचते हैं । मगर हम सँभलकर नहीं चलेंगे, तो वे रहनेवाले नहीं हैं ।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १७-१२-'४७

जबरदस्तीसे कब्जा

अेक भाअी, जो सियालकोटमें रहते थे, लिखते हैं कि पहले तो पंजाब अेक था; सो अुनका मकान पूर्वी पंजाबमें था और वह व्यापार पश्चिमी पंजाबमें करते थे । पश्चिमी पंजाबसे अुन्हें भागना पड़ा । पूर्वी पंजाबमें आकर देखा कि अुनके मकानमें सरकारी अमलदार रहते हैं । अुन्होंने बहुत कोशिश की कि मकान खाली हो जाय, पर यह हो न सका । अुन्हें अपने घरमें सिर्फ़ दो कमरे रहनेको मिले । वह पूछते हैं — क्या हुकूमतको अुनका मकान खाली करवानेमें अुनकी मदद नहीं करनी चाहिये ? क्या यह अच्छा होगा कि अिसके लिअे अुन्हें कोर्टमें जाना पड़े ? मैं मानता हूँ कि हुकूमतको अुनका मकान खाली करवानेमें अुनकी मदद करनी चाहिये, ताकि अुन्हें कोर्टमें जानेकी जरूरत न पड़े । मकानमें रहनेवाले भाअी सरकारी अमलदार हैं, अिसलिअे अुनका मकान खाली करवाना सरकारके लिअे आसान होना चाहिये । यहाँ भी दुःखी लोग मकानोंका कब्ज़ा ले बैठे हैं । ताला भी तोड़ लेते हैं । मकान-मालिक अपने मकानमें रहना चाहे, तब कोअी सरकारी अमलदार अुसमें कैसे रह सकते हैं ? शरणार्थी मनमें आवे वैसा करने बैठ जाते हैं । और, अगर वह मकान मुसलमानका हुआ, तब तो कहना ही क्या ? अैसा करके वे न अपना भला करते हैं, न हिन्दुस्तानका । चोरी, लूट-मार वगैरा करके क्या कभी किसीका भला हो सकता है ?

मीठी बातें

लोग मुझे रोज सुनाते हैं कि पाकिस्तानवाले मीठी बातें भले करें, मगर वहाँ कोअी हिन्दू या सिक्ख अिज़्ज़त-आबरूके साथ नहीं

www.vinoba.in

रह सकता। अगर अैसा ही सिलसिला चलता रहा, तो पाकिस्तानमें कोअी हिन्दू-सिक्ख नहीं रह जायगा। आखिरमें मुसलमान आपस आपसमें लड़ेंगे। अिसी तरह हमारे यहाँसे सब मुसलमान निकाले जायँ, तो वह भी बुरा है। हमने तो कभी कहा ही नहीं कि हिन्दुस्तान सिर्फ़ हिन्दुओंका ही है। आवाज़ अुठी थी कि मुसलमानोंके लिअे अलग जगह चाहिये। मगर अैसा किसीने नहीं कहा कि वहाँ मुसलमानोंके सिवा कोअी रह नहीं सकेगा। १५ अगस्त आअी। आवाज़ अुठी कि पाकिस्तानमें सबको रखना है। मुझे वह अच्छा लगा। पर अुसपर अमल न हो सका। दोनों तरफ़ खून-खच्चर वगैरा चलता रहे, तो आखिरमें दोनोंका संहार ही होना है।

लौटनेकी शर्तें

अेक दूसरे भाअी लिखते हैं कि "मुझे लाहोरसे भागना पड़ा, मगर जब आपने कहा कि सबको अपने घर लौटना ही है, तब मैं वापिस पश्चिमी पंजाबमें गया। वहाँपर मेरी ज़मीन और मकान दूसरोंको मिल चुके थे। मैंने बहुत कोशिश की, मगर मुझे वे वापिस मिल नहीं सके। अैसी हालतमें लोग कैसे वापस जा सकते हैं?" मैंने तो आज किसीको कहा ही नहीं कि वापस जाना है। जब मौका आयेगा, तब मुसलमान भाअी अुनके साथ जायेंगे; और ज़रूरत होगी, तो मैं भी जाअूँगा। आज तो सब बात ही बात है। मगर हमेशा अैसा रहनेवाला नहीं। कहना अेक और करना दूसरा, यह कब तक चल सकता है? आज तो शरणार्थियोंको तैयारी ही रखना है। जब तक मैं यह न कहूँ कि फलानी तारीखको जाना है, तब तक आप रवाना नहीं होंगे। मेरे मनमें नहीं था कि अितनी जल्दी वापस जानेकी बात भी निकल सकती है। निकली सो अच्छा लगता है। मगर फ़िज़ा बदलनेमें कुछ समय तो लगेगा ही। अभी तो तजवीज़ ही चल रही है। मेरी अुम्मीद है कि जब सब तैयारी हो जावेगी, तब पाकिस्तान-वाले गाड़ी भेजकर कह देंगे कि अितने हज़ार आदमी आवें।

पूर्वी अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी

अब पूर्वी अफ्रीकाकी बात करूँगा। वहाँ नैरोबी नामका अेक शहर है। अुसे बनानेमें सिक्खोंने बड़ा हिस्सा लिया है। सिक्ख जैसे-तैसे लोग नहीं, बड़ी क़ाबिल कौम हैं। वे मेहनत करनेवाले हैं। वहाँ खूब मेहनत करके अुन्होंने रेलें बनाअीं, मगर अब वहाँ जा नहीं सकते। मज़दूरी कर सकते हैं, मगर वहाँ रह नहीं सकते। अिस बारेमें वहाँ कानून भी बना है। अभी वह पास नहीं हुआ। अुस कानूनमें हिन्दुस्तानियोंके हक़ बहुत कम कर दिये हैं। पंडित जवाहरलालजी तो फॉरेन मिनिस्टर और प्राअिम मिनिस्टर हैं। अुनको वहाँके हिन्दुस्तानियोंने तार दिया है और अुस तारकी नकल मुझे भेजी है। वे लिखते हैं कि हिन्दुस्तानके आज़ाद होनेके बाद भी हिन्दुस्तानियोंके अैसे हाल हो सकते हैं? मोम्बासा ब्रिटिश लोगोंकी हुकूमतमें है। वहाँ हिन्दुस्तानियोंका यह हाल क्यों? पूर्वी अफ्रीकामें हमारे काफ़ी ताजिर (व्यापारी) पड़े हैं। हिन्दू और मुसलमान दोनों हर जगहसे वहाँ गये हैं। अुन लोगोंने पैसा भी काफ़ी कमाया है। लेकिन हब्शी लोगोंके साथ तिजारत करके कमाया है, लूटकर नहीं। अंग्रेजोंसे और यूरोपके दूसरे लोगोंसे पहले हमारे लोग वहाँ गये थे। अुन्होंने वहाँ बड़े मकान बाँधे, तिजारत बनाअी। वे सबके साथ मिल-जुलकर रहे। अुन्होंने हमेशा शुद्ध कौड़ी ही कमाअी, अैसा नहीं कहा जा सकता। मगर अुन्होंने किसीपर ज़बरदस्ती भी नहीं की। वे लिखते हैं कि यह बिल रुकना चाहिये। मैं भी मानता हूँ कि वह रुकना चाहिये। मगर अुसे रोकनेकी आज हमारी ताक़त नहीं। आपसमें दुश्मनी करके हम आज अपनी शक्तिको क्षीण कर रहे हैं। हमारे पास अेक ही बल है। वह है — हमारा नैतिक बल। अुसे खोकर हम कहाँ जावेंगे? राक्षसी बलके सामने दैवी बल ही टिक सकता है। मैं आशा रखता हूँ कि पूर्वी अफ्रीकाकी सरकार समझ जायेगी कि अुसे हिन्दुस्तानको दुश्मन नहीं बनाना चाहिये। जवाहरलालजीसे तो जो हो सकेगा, वह सब करेंगे।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १८-१२-'४७

भ्रमसे भरी दलील

आज मेरे पास अेक खत आया है। अुसीके बारेमें आपसे बात करना चाहता हूँ। खत लिखनेवाले भाअी मुझसे पूछते हैं कि "आपने तो कहा है कि हिन्दुस्तान सबका मित्र है। तब आप अेंग्रेजों और मुसलमानोंमें फ़र्क़ कैसे करते हैं? अंग्रेजीका आप विरोध करते हैं और अुर्दूका पक्षपात? आपका प्रार्थना-सभामें यह कहना कि आपको दुःख होता है कि लोग अभी भी आपको अंग्रेजीमें लिखते हैं, मुझे चुभता है। मुझे अिससे दुःख होता है। आपने कहा है कि क्या सर तेजबहादुर सप्रू अुर्दू भूल सकते हैं? लेकिन मैं आपसे कहता हूँ कि मद्रासकी तरफ़ करीब करीब सब लोग अंग्रेजी जानते हैं। क्या वे अंग्रेजी भूल सकते हैं?" दुःखका कारण आम तौर पर आदमीकी बेखबरी और अज्ञान होता है। अिन भाअीके प्रश्नोंसे मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने कहा है कि हम सारी दुनियाके मित्र हैं और सारी दुनिया हमारी मित्र है। लेकिन अिसके साथ भाषाका क्या सम्बन्ध है? वे पूछते हैं कि अगर मुझे अुर्दूका अेतराज़ नहीं, तो अंग्रेजीका क्यों? यह प्रश्न भारी अज्ञानका सूचक है। अुर्दूका मैं विरोध नहीं करता यह सही है। अुर्दू अंग्रेजीकी तरह परदेशी भाषा नहीं। वह तो यहीं बनी है और मुझे अिस बातका फख्र है। अुर्दू मुगलोंके वक्त फ़ौजकी भाषा थी। फ़ौजमें जो हिन्दू-मुसलमान थे, वे सब हिन्दुस्तानी थे। मुगल बादशाह बाहरसे आये थे, मगर वे हिन्दुस्तानके हो गये थे। हमें प्रान्तीय भाषाओंको मिटाना नहीं, अुन्हें भव्य बनाना है। मगर अुसके साथ साथ हमारी राष्ट्रभाषा क्या होगी, यह भी सोचना है। हिन्दुस्तानमें १४ भाषाअें चलती हैं। अिनके सिवा कअी दूसरी भाषाअें भी बोली जाती हैं, जो अितनी आगे नहीं बढ़ी हैं। अलग अलग प्रान्तोंको आपसमें व्यवहार करनेके लिअे कौनसी भाषाका आश्रय लेना होगा? मैं जब बैरिस्टर होकर आया था, तब तो लड़का ही था। दो बरस हिन्दुस्तानमें रहकर दक्षिण अफ्रीका चला गया और वहाँ २० बरस रहा। जबसे मैं दक्षिण अफ्रीकासे हिन्दुस्तान लौटा, तभीसे कहता रहा हूँ कि हमारी राष्ट्रभाषा वही हो सकती है, जिसे हिन्दू और मुसलमान बोलते हैं, और अुर्दू और नागरी लिपिमें लिखते हैं। अंग्रेजी कभी हमारी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। मैं अुर्दू लिपिका समर्थन करता हूँ और अंग्रेजीका नहीं, अिसमें आश्चर्य क्या हो सकता है? तुलसी-दासकी भाषाको आप मूल अुर्दू भाषा कह सकते हैं। बादमें अुसमें अरबी-फ़ारसी शब्द भर दिये गये। तुलसीदासके हम सब भक्त हैं। तुलसीदासने जो लिखा, सो आपके लिअे लिखा, मेरे लिअे लिखा। अुन्होंने अरबी-फ़ारसीके शब्द भी लिये। मगर वे शब्द आम तौरपर प्रचलित थे।

निरा अज्ञान

लाला लाजपतराय पंजाबके शेर थे। वह चले गये। मैं अुनका मित्र था। मैं अक्सर अुनसे मजाक किया करता था कि तुम हिन्दी कब बोलोगे और देवनागरी कब लिखोगे? वह जवाब देते थे कि यह होनेवाला नहीं है। वह आर्यसमाजी थे। अुनके घरमें हमेशा हवन होता था। अुर्दूके वे बड़े विद्वान थे। शीघ्रतासे लिख सकते थे। घंटों तक अुर्दूमें और अंग्रेजीमें बोल सकते थे। पर हिन्दी नहीं जानते थे। अुनके साथ बात करते समय मुझे चुन चुनकर अरबी-फ़ारसीके शब्द अिस्तेमाल करने पड़ते थे। अैसा नहीं है कि मुसलमान मेरे ज़्यादा दोस्त हैं और हिन्दू कम। मेरे पास सब समान हैं। जो मेरे लड़के-लड़की माने जाते हैं, वे अुतने ही मेरे प्यारे हैं जितने कि देशके दूसरे लड़के-लड़की। धर्म हमें यही सिखाता है। यह सीधी बात है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनका मैं दो बार सभापति बना था। वहाँ भी मैंने अंग्रेजीका विरोध किया था। लोगोंने तालियाँ बजाअी थीं। आज मैं जब अुर्दूका पक्ष लेता हूँ, तो कम हिन्दू नहीं हो जाता। जो

www.vinoba.in

अुर्दूका द्वेष करते हैं और अंग्रेजीका पक्षपात करते हैं, वे कम हिन्दू हैं। अंग्रेजोंके जमानेमें भी मैं वही बातें करता था। मैं न तो अंग्रेजोंका दुश्मन हूँ और न अंग्रेजीका। मगर सब चीज़ अपनी अपनी जगहपर अच्छी लगती है। अंग्रेजी दुनियाकी, व्यापारकी भाषा है, हमारी राष्ट्रभाषा नहीं। अंग्रेजी राज्य तो यहाँसे गया, लेकिन अंग्रेजी भाषाका और अंग्रेजी सभ्यताका असर नहीं गया। यह बड़े दुःखकी बात है। पत्र लिखनेवाले भाअी मद्रासको जानते नहीं। यहाँके बनिस्बत वहाँ ज्यादा लोग अंग्रेजी जानते हैं। मगर मैं बहुत दिनों पहले जब मद्रास गया था, तब महात्मा नहीं बना था। तांगेवाला मेरी अंग्रेजी नहीं समझा, मगर मेरी टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी समझकर वह मुझे नटेसनजीके घरपर ले गया था। दक्षिणमें मुख्यतः चार भाषाअें चलती हैं—तामिल, तेलगू, मलयालम और कन्नड़। मगर सब जगह टूटी-फूटी हिन्दुस्तानीसे काम चल जाता है। तो लोग मुझे राष्ट्रभाषामें लिखें, प्रान्तीय भाषामें लिखें। अंग्रेजीमें क्या लिखना? हिन्दुस्तानी अुर्दू और हिन्दीके संगमसे बनती है, जैसे कि गंगा-जमना के संगमसे त्रिवेणी बनती है। अुर्दूका अर्थ है अरबी और फारसी से भरी भाषा। हिन्दी, संस्कृतसे भरी भाषा है। हिन्दुस्तानीमें सब प्रचलित शब्द होते हैं। व्याकरण तो अेक ही (हिन्दी) होगा। हिन्दुस्तानीमें अरबी, फारसी, संस्कृतके प्रचलित शब्द आयेंगे। अुसमें अंग्रेजीके शब्द भी आयेंगे, जैसे रेलगाड़ी, कोर्ट वगैरा। अुससे हमें नफरत नहीं। लेकिन हिन्दुस्तानी जाननेवाला अगर मुझे अंग्रेजीमें लिखे, तो अुसके खतको मैं फेंक दूँगा। मेरा लड़का मुझे अंग्रेजीमें लिखे, तो अुसके खतको फेंक दूँगा। मगर अंग्रेज तो अंग्रेजीमें लिखेंगे ही। अैसी सादी और सरल बातको हम क्यों नहीं समझ सकते? कारण यह है कि हम अपना धर्म-कर्म सब भूल गये हैं। जो विकृति पैदा हो गअी है, अुससे हमें अीश्वर बचावे।

अधर्म

अजमेरमें जो कुछ हुआ, अुसे आप याद करें। यहाँ मुसलमानोंको मारकर हम हिन्दू धर्मकी रक्षा नहीं कर सकेंगे। मैं दो चार दिनका मेहमान हूँ। बादमें आप लोग मेरी बातोंको याद करेंगे। अगर मुसलमान कहें कि पाकिस्तानमें मुसलमानोंके सिवा कोअी नहीं रहेगा, तो वे अिस्लामको दफना देंगे। अिसी तरह अगर बाअिबिलको माननेवाले अीसाअी या कुरानको माननेवाले मुसलमान कहें कि हम ही अहले किताब हैं, तो यह बात ग़लत है। सब धर्म भलाअी सिखाते हैं, बुराअी और दुश्मनी नहीं।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १९-१२-'४७

जसरा गाँवका दौरा

आज मैं गुड़गाँवकी तरफ़ गया था। वहाँपर मेव लोग पड़े हैं। कुछ अलवरसे ज़बरन भगाये गये हैं, कुछ भरतपुरसे। अुनकी मसजिदें वग़ैरा ढा दी गअी हैं। डॉ॰ गोपीचन्द भार्गव भी मेरे साथ गये थे। अुन लोगोंने अपनी कहानी सुनाअी। हिन्दू भी काफ़ी थे। देखनेमें अैसा लगता था कि अिनमें कुछ वैमनस्य है ही नहीं। मगर वह है। मेव लड़ाके होते हैं। मगर अब डर गये हैं। कअी पाकिस्तान चले गये हैं। कअी अिस सोचमें हैं कि अुन्हें जाना चाहिये या रहना चाहिये। डॉ॰ गोपीचन्दने अुन्हें सुना दिया कि जो रहना चाहते हैं, वे ज़रूर रह सकते हैं। जहाँ तक मैं समझता हूँ और जिन्दा हूँ, मुझसे तो यह बर्दाश्त ही नहीं होनेवाला है कि लाखों लोग अपना घर छोड़कर बेघर बने रहें। लाखोंको दोनों तरफ़से घर छोड़कर भागना पड़ा, वह वहशियाना बात थी। किसने शुरू किया, किसने ज्यादा किया, अिसका खयाल छोड़ दें; नहीं तो दुश्मनी मिट ही नहीं सकती। मजबूरीसे किसीको भागना न पड़े, अितना ही आपको देखना है। जो डर गये हैं, और जाना चाहते हैं, वे भले जावें। वहाँ कअी बहनें भी थीं। किसीके पास तम्बू है, तो किसीके पास नहीं। वे वापिस तो तभी जा सकते हैं, जब अलवर और भरतपुरके लोग अुन्हें बुला लें। कअी लोग कहते हैं कि मेव लोग तो गुनाह करनेवाले हैं। अगर अैसा भी हो, तो क्या गुनाह करनेवालोंको मार डालेंगे? सीधा रास्ता तो अुन्हें सुधारना और शराफ़त सिखाना है।

कीमतें और अंकुशका हटना

अेक भाअीका तार है कि आपने तो कहा था कि चीनीका भाव गिर गया है, मगर यहाँ तो बढ़ा है। अुसका जवाब यह है कि किसी जगहपर खास कारणसे भले बढ़ा हो, मगर दूसरी जगहोंपर कम हुआ है। दिल्लीमें शक्करका भाव कम हुआ है। शक्कर तो चीनीसे अच्छी है।

पेट्रोलपर अंकुश

अेक जगहसे दूसरी जगह माल ले जानेमें कठिनाअी होती है। डॉ॰ मथाअी कहते हैं कि अुनके पास माल ढोनेके डिब्बों और कोयलेकी कमी है। ये दिक़्क़तें दूर करनेकी कोशिश हो रही है। आश्चर्यकी बात है कि जब रेल नहीं थी, तब हमारा काम चलता था। मगर अब रेल है, मोटर है, हवाअी जहाज़ हैं, तो भी हमारे हाथ-पाँव फूल जाते हैं। रेलके अलावा लोगोंको और सामानको अिधर-अुधर ले जानेका ज़रिया मोटर है। मगर मोटर तो पेट्रोलसे ही चल सकती है। और पेट्रोलपर अंकुश है। पेट्रोलका अंकुश अुठा दिया जाय, तो लारियोंवाले लारियाँ चला सकते हैं। नमकका कण्ट्रोल छूटा, मगर नमकका भाव बढ़ा। आज नमक मिलना मुश्किल हो गया है। अैसा ही पेट्रोलके बारेमें हो सकता है। मगर मुझे तो अुसमें हर्ज़ नहीं है। पेट्रोल अैसी चीज़ नहीं, जिसकी सबको ज़रूरत हो। और लारियाँ चलने लगें, तो नमककी कमी पूरी हो सकती है। अेकपर क़ण्ट्रोल रखना और अेकपर नहीं, यह चल नहीं सकता। हमें अेक ही नीति रखनी चाहिये और देखना चाहिये कि लोग क्या करते हैं। काले बाज़ारमें तो पेट्रोल सबको मिलता ही है। कअी लोग अुसे काला बाज़ार कहते भी नहीं, क्योंकि वह तो दिन दहाड़े चलता है। पेट्रोलके पीछे खूब रिश्वतखोरी चलती है। सैकड़ों रुपये अफ़सरोंको देने पड़ते हैं। अेक बुराअीमें से अनेक बुराअियाँ निकलती हैं। *पेट्रोल खानेकी चीज़ नहीं। हरअेकके अुपयोगकी चीज़ नहीं।* हुकूमतको अपने कामके लिअे जितने पेट्रोलकी ज़रूरत है अुतना रख ले और बाकीपर से अंकुश हटाले। परिणाममें अगर बाज़ारमें पेट्रोल बिकना बन्द हो जाय, तो अुससे मुझे कोअी अफ़सोस न होगा। हिन्दुस्तानका कारोबार अुससे बन्द होनेवाला नहीं है। हिन्दुस्तान मर नहीं जायगा; ज़िन्दा ही रहेगा।

मिश्र खाद

हमारे यहाँ पूरी खुराक पैदा नहीं होती, क्योंकि हमारी ज़मीनको पूरी खाद नहीं मिलती। हम खाद बाहरसे लाते हैं। अुससे रुपया बरबाद होता है। ज़मीन भी बिगड़ती है। मीराबहनने यहाँ अेक कान्फरेन्स बुलाअी थी। वह किसान बन गअी है। अुसे गाय प्रिय है। जितने अुसे आदमी प्रिय हैं, अुतने ही जानवर भी प्रिय हैं। गायको वह मित्र जैसी समझती है। अपनी खुराक छोड़कर अुसे खुराक देगी, सब तरहकी सेवा करेगी। अुसने कान्फरेन्सकी बात निकाली। पीछे अुसमें सर दातारसिंह और राजेन्द्रबाबू वगैरा भी आये। अुन्होंने कुछ प्रस्ताव पास करके बताया है कि खाद कैसे बन सकता है। लोग जानवरोंके मलको कचरेके साथ मिलाकर जब खाद बनाते हैं, तब पता नहीं चलता कि वह खाद है। अुसे हाथमें ले लो, तो बदबू नहीं आती। कचरेमेंसे करोड़ों रुपये बन सकते हैं। वे लोग पैसेके प्रलोभनसे नहीं आये थे। सेवा-भावसे आये थे। दो तीन दिन बैठे। राजेन्द्रबाबू प्रधान थे। अुनके प्रस्तावोंका निचोड़ यह था कि हम कचरेमेंसे करोड़ों रुपये कैसे बना सकते हैं और अेक मनकी जगह दो मन, चार मन धान कैसे पैदा कर सकते हैं। मीराबहन चली गअी है। वह हरिद्वारके पास बैठकर यही काम करेगी। मैंने सोचा कि अिस बारेमें आपको भी बता दूँ।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २०-१२-'४७

बुजदिली छोड़दो

यह दुःखकी बात है कि दिल्लीमें थोड़े पैमानेपर फिर गोलमाल शुरू हो गया है। अगर यहाँके हिन्दू और सिक्ख या पाकिस्तानसे आये हुअे दुःखी लोग यह नहीं चाहते कि मुसलमान यहाँ रहें, तो अुन्हें साफ साफ यह कह देना चाहिये। हुकूमतको भी साफ साफ कह देना चाहिये कि वह मुसलमानोंकी रक्षा नहीं कर सकती। हमारे लिअे यह शर्मकी बात होगी। अिसमें हिन्दू धर्म और सिक्ख धर्मका अस्त है। अुसी तरह अगर पाकिस्तानमें हिन्दुओं और सिक्खोंको आरामसे रहने न दिया जाय, तो अुसमें अिस्लामका अस्त है। हिन्दू धर्म तो हिन्दुस्तानमें ही है। दिल्लीसे बहुतसे मुसलमान तो भगा दिये गये हैं; जो बाकी हैं, अुन्हें तरह तरहसे परेशान किया जाता है। यह बुरी बात है। अगर हम बहादुर बनें, शरीफ़ बनें, तो मुसलमान या किसीका भी डर रखनेकी ज़रूरत नहीं। आपने अभी भजनमें सुना — मीरा भक्तको देखकर खुश होती थी, और जगतको देखकर रोती थी। भक्तको देखकर अुसके मनमें भी भक्ति पैदा होती थी। अगर आप भले हैं, तो दूसरोंको भले बनना ही होगा। मुसलमान अगर कहें कि हिन्दू बुरे हैं, अुन्हें मारो, काटो, तो यह ग़लत है। अिसी तरह हिन्दू अगर मुसलमानोंको बुरे समझकर मारकाट करें, तो वह भी गलत है। बुरा अपनी बुराअीसे खुद मर जायेगा। यहाँपर मुसलमान हिन्दुओंसे डरें और पाकिस्तानमें हिन्दू मुसलमानोंसे डरें, यह असह्य होना चाहिये। हमने बातें तो बड़ी बड़ी की हैं और आज भी करते हैं कि हमारे यहाँ सब आरामसे रह सकते हैं। मगर अैसा होता नहीं। अगर हमारी हुकूमतको सच्ची बनना है, तो सरकारी अफ़सरों और पुलिस वगैरा सबको ठीक तरहसे चलना होगा। आज तो हुकूमतकी जो बागडोर हमारे हाथमें आ गअी है, वह छूट रही है।

ग्राम-अुद्योग

मगर आज मैं आपसे ग्राम-अुद्योगके बारेमें बात करना चाहता हूँ। जब मैं हरिजन-बस्ती जाता था, तब वहाँ ग्राम-अुद्योग-संघकी भी सभा हुअी थी। अुस बारेमें मैं आपको कुछ कह नहीं सका। मैंने कअी बार कहा है कि चरखा मध्य-बिन्दु है, सूर्य है और दूसरे ग्राम-अुद्योग अुसके अिर्दगिर्द घूमनेवाले ग्रह हैं। अगर सूर्य नहीं चलता तो ग्रह नहीं चल सकते। आपके झंडेमें चक्र है। अुसे सुदर्शन चक्र कहो या अशोकका धर्मचक्र कहो, वह चरखेकी निशानी है। जैसे सूर्य न हो, तो ग्रह नहीं रह सकते, अुसी तरह मैं मानता हूँ कि अगर ग्रह न रहें, तो सूर्यको भी कुछ न कुछ नुक़सान होगा। मगर अिसे मैं वैज्ञानिक दृष्टिसे सिद्ध नहीं कर सकता।

ग्राम-अुद्योग-संघ चला तो कांग्रेसकी तरफ़से, मगर वह है स्वावलम्बी। चक्कीका अुद्योग बन्द होनेसे आज अच्छा आटा नहीं मिलता। क्या सब जगहोंपर आटा पीसनेकी मशीन जायगी? क्यों जाय? दिल्लीके आसपास बहुतसे देहात हैं। दिल्लीको अुनका आश्रय लेना है और अुनको आश्रय देना है। तब वह खूबसूरत चीज़ बन जाती है और दोनों अेक दूसरेको समृद्ध बनाते हैं। सुनता हूँ कि दिल्लीमें बहुतसे कारीगर मुसलमान थे। अुनके जानेसे लोगोंको बहुत कठिनाअी हो रही है। पानीपतमें बहुतसे मुसलमान कम्बल बनानेका काम करते थे। अुनके जानेसे वह अुद्योग भी अस्त-सा हो गया है। नये हिन्दू कारीगर वह धंधा नये सिरेसे सीखें, तबकी बात तब है। कअी धंधे आम तौरपर हिन्दू करते थे, कअी मुसलमान। दोनों तरफ़से कारीगरोंके चले जानेसे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों आज डूब रहे हैं।

पूँजी और मेहनत

कल मैंने आपको खादकी बात सुनाअी थी। गोबर, कचरा, मनुष्यका मल वगैरामेंसे खूबसूरत और सुगन्धित खाद मिल सकती है। अुसे आप संदूकमें रख सकते हैं। जैसे धूलसे सन्दूक नहीं बिगड़ता, वैसे अिससे भी नहीं बिगड़ता। यह सुनहली चीज़ है। धूलमेंसे धान पैदा करनेकी बात है। दिल्लीमेंसे ही कितना कचरा अिकट्ठा होता है। मगर दिल्ली तो अेक शहर है। हिन्दुस्तानके ७ लाख देहातोंमें पशु और अिन्सान मैला निकालते हैं। अपनी जगहपर वह सुनहली चीज है। खाद बनाना भी अेक ग्राम-अुद्योग है। चरखा ग्राम-अुद्योग है। वह तभी चल सकता है, जब करोड़ों अुसमें हिस्सा लें, मदद दें। तभी बड़ा नतीजा आ सकता है। यह पूँजी और श्रमका बुनियादी भेद है। हरिजन-सेवक-संघ, ग्राम-अुद्योग-संघ, गोसेवा-संघ, तालीमी-संघ, चरखा-संघ, सब गरीबोंकी सेवाके लिअे हैं। पंचायत राज्य हिमालयसे नहीं अुतरनेवाला है। जनता अुसकी नींव है। नींव मज़बूत हो, तभी अुसपर बड़ा मकान बन सकता है। अिन पाँचों संघोंका काम करके आपको यह नींव मज़बूत करनी है। नहीं तो आज यादवी तो चल ही रही है। यादव आपस आपसमें लड़ मरे थे। यादव-स्थलीको रोकना है, तो आपको रचनात्मक कार्यक्रमपर ज़ोर देना चाहिये।

देहातोंमें संग्रहकी ज़रूरत

श्री वैकुण्ठभाअी लिखते हैं —

"आजकलकी व्यापार पद्धतिका परिणाम यह होता है कि देहातोंका अनाज परदेश चला जाता है। देशके बहुतसे हिस्सेमें गाँवोंमें स्थानिक संग्रह नहीं रहता। परिणाममें मज़दूर-वर्गको कष्ट अुठाना पड़ता है और चौमासेमें अनाजका भाव खूब बढ़ जाता है। अैसी हालतमें यह अच्छा होगा कि गरीब प्रजाको बचानेके लिअे देहातमें ही पंचके कब्जेमें किसी अच्छे गोदाममें काफी मिकदारमें अन्न अिकट्ठा किया जाय और वहींसे जहाँ भेजना हो भेजा जाय। अिस दृष्टिसे चार साल पहले श्री अच्युतराव पटवर्धन और मैंने अेक योजना तैयार की थी। श्री कुमारप्पाने जो योजना बनाअी है, अुसमें भी अुन्होंने अिस तरहकी व्यवस्थाकी ज़रूरत स्वीकार की है।

"आजके नये संजोगोंमें आपको ठीक लगे, तो आप प्रान्तीय सरकारोंको और देहाती प्रजाको अिस बारेमें कुछ सूचना कर सकते हैं।"

मुझे तो अिस सूचनामें बहुत सचाअी मालूम होती है। हमारे देशके अर्थशास्त्र या माली व्यवस्थाके लिअे अैसे संग्रहकी ज़रूरत है। जबसे नकद टैक्स देनेकी प्रथा जारी हुअी, तबसे देहातोंमें अन्नका संग्रह कम हो गया है। यहाँ मैं नकद टैक्सके गुण-दोषोंमें अुतरना नहीं चाहता। मगर अितना मैं मानता हूँ कि अगर देहातोंमें अन्न-संग्रह करनेकी प्रथा चालू होती, तो आजकी विपदासे शायद हम बच जाते। जब अंकुश अुठ रहे हैं, तब अगर वैकुण्ठभाअीकी सूचनाके अनुसार देहातमें अन्नका संग्रह हो, और व्यापारी और देहाती अीमानदार बन जावें, तो किसीको कष्ट नहीं होगा। अगर किसानको और व्यापारीको योग्य नफा मिले, तो मज़दूर-वर्ग और शहरके दूसरे लोगोंको महँगाअीका सामना करना ही न पड़े। मतलब तो यह है कि अगर सबके अनुकूल जीवन बन जाय, तो फिर सस्ते और महँगे भावका सवाल अुठ जायेगा।

नअी दिल्ली, २२-१२-'४७

(गुजरातीसे)

मो० क० गांधी

विषय-सूची

		पृष्ठ
मिश्र खाद	... गांधीजी	४१३
त्याग और अुद्यमका नमूना	... गांधीजी	४१३
गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण	...	४१४
मेवोंको गांधीजीका सन्देश	... प्यारेलाल	४१५
आरोग्यके नियम	... गांधीजी	४१६
सोमनाथका मन्दिर	... सुन्दरलाल	४१६
टिप्पणी —		
देहातोंमें संग्रहकी ज़रूरत	... मो० क० गांधी	४२०

www.vinoba.in